

अज्ञान नाशाय विज्ञान पूषाय सुज्ञानदात्रे नमस्ते गुरो ।
 श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ १ ॥
 आनंदरूपाय नंदात्मज श्रीपदांभोजभाजे नमस्ते गुरो ।
 श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ २ ॥
 छष्टप्रदानेन कष्टप्रहासेन शिष्टस्तुत श्रीपदांभोज भो ।
 श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ ३ ॥
 षडे लवत्पाद पाथोजमाध्याय लूयोऽपि लूयो लयात् पाहि भो ।
 श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ ४ ॥
 उग्रं पिशाचादिकं द्रावयित्वाशु सौम्यं जनानां करोशीष भो ।
 श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ ५ ॥
 ओर्जत् कृपापूर पाथोनिधेमंक्षु तुष्टोऽनुगृह्णासि लक्त्वान् विभो ।
 श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ ६ ॥
 ऋजूतम प्राण पादार्यनप्राप्त माहात्म्य संपूर्ण सिद्धेश भो ।
 श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ ७ ॥
 ऋभुस्वभावाम लक्तेष्टकल्पद्रु रूपेश लूपादि वंध प्रभो ।
 श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ ८ ॥
 ऋद्धं यशस्ते विभाति प्रकृष्टं प्रपन्नार्तिहंतर्महोदार भो ।
 श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ ९ ॥
 क्लिप्ताति लक्तौघ काम्यार्थ दातर्भवांभोषि पारंगत प्राज्ञ भो ।
 श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ १० ॥
 अकांत लक्ताय माकांत पादाब्ज उच्याय लोके नमस्ते विभो ।
 श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ ११ ॥
 अश्वर्यलूमन् महाभाग्यदायिन् परेशां य इत्यादि नाशिन् प्रभो ।
 श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ १२ ॥
 ओंकार वाय्यार्थभावेन भावेन लब्धोदय श्रीक योगीश भो ।
 श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ १३ ॥
 और्वानलप्रप्य दुर्वाद्विदावानलैः सर्वतंत्र स्वतंत्रेश भो ।
 श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ १४ ॥
 अंभोजसंभूतमुष्यामराराध्य लूनाथ लक्तेश भावज्ञ भो ।
 श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ १५ ॥
 अस्तंगतानेकमायादि वादीश विधीतिताशेष वेदांत भो ।
 श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ १६ ॥
 काम्यार्थदानाय बद्धादराशेष लोकाय सेवानुसक्ताय भो ।
 श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ १७ ॥
 अघोतसारेषु प्रत्यर्षिसार्थेषु मध्याह्न मार्ताण्ड विंबाल भो ।
 श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ १८ ॥
 गर्विष्ठ गर्वांबुशोषार्यमात्युग्र नम्रांबुधेर्यामिनी नाथ भो ।
 श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ १९ ॥
 घोरामयध्वांत विध्वंसनोद्गम दृढीप्य मानार्क विंबाल भो ।
 श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय श्रीराघवेन्द्राय पाहि प्रभो ॥ २० ॥

ऽषात्कारदंसांक काषायवस्रांक कौपीन पीनांक डंसांक भो ।
 श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ २१ ॥
 यंडीश कंडीश पाप्मंड वाक्कांड तामिश्रमार्तांड पाषंड भो ।
 श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ २२ ॥
 छन्नाणुभागं नविद्मस्त्वदंतः सुसन्नैव पद्मावधस्यासि भो ।
 श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ २३ ॥
 ज्ञाड्यंछिनस्त्वज्वरार्शःक्षयाधाशु ते पाद पद्मांबुवेशोऽपि भो ।
 श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ २४ ॥
 ञशध्वञ्जयेष्वलस्योरुयेतः समारूढमारूढ वक्षोग भो ।
 श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ २५ ॥
 जांयाविडीनाय यादृच्छिक प्राप्त तुष्टाय सधः प्रसन्नोऽसि भो ।
 श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ २६ ॥
 टीकारडस्यार्थ विष्यापनग्रंथ विस्तार लोकोपकर्तः प्रभो ।
 श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ २७ ॥
 ठंडुर्वरीणाम मेयप्रभावोद्धुरापाद संसारतो मां प्रभो ।
 श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ २८ ॥
 डाकिन्यपस्मार घोराधिकोत्र ग्रहोय्याटनोदग्र वीराग्र्य भो ।
 श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ २९ ॥
 ढक्काधिकध्वान विद्रावितानेक दुर्वादिगोमायु संघात भो ।
 श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ ३० ॥
 णात्मादिमात्रर्षलक्ष्यार्थक श्रीपतिध्यानसन्नद्धधीसिद्ध भो ।
 श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ ३१ ॥
 तापत्रय प्रौढ व्याधाभिलूतस्य लक्तस्य तापत्रयं डंसि भो ।
 श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ ३२ ॥
 स्थानत्रयप्रापकज्ञानदातस्त्रिधामांघ्रिलक्तिं प्रयच्छ प्रभो ।
 श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ ३३ ॥
 दारिद्र्य दारिद्र्य योगेन योगेन संपन्न संपत्ति मा देहि भो ।
 श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ ३४ ॥
 धावंति ते नामधेयाभि संकीर्तनेनैव सामाशु वृंदानि भो ।
 श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ ३५ ॥
 नाना विधानेक जन्मादि दुःभौघतः साध्वसंसंहरोदार भो ।
 श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ ३६ ॥
 पाता त्वमेवेति माता त्वमेवेति मित्रं त्वमेवेत्यहं वेद्मि भो ।
 श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ ३७ ॥
 ङ्गलस्थदुर्दैववर्षावणीकार्यलोपेऽपि लक्तस्य शक्तोऽसि भो ।
 श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ ३८ ॥
 बद्धोस्मि संसार पाशेन तेऽंघ्रिं विनान्या गतिर्नेत्यमेमि प्रभो ।
 श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ ३९ ॥
 भावे लज्जामीह वाया वदामि त्वदीयं पदं दंडवन्नौमि भो ।
 श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४० ॥

॥ श्री राघवेन्द्र अक्षरमाविका स्तोत्र ॥

मान्येषु मान्योऽसि मत्या य धृत्या य मामधमान्यं कुरुद्राग्विभो ।
श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४१ ॥
यं काममाकामये तं न यापं ततस्त्वं शरण्यो भवेत्येमि भो ।
श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४२ ॥
राजादि वश्यादि कुक्षिंभरानेकयातुर्यविधासु मूढोऽस्मि भो ।
श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४३ ॥
वक्ष्येशु ते भक्तवर्गेशु कुर्वेकवक्ष्यं कृपापांगवेशस्य मां ।
श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४४ ॥
वारांगनाधूतयौर्यान्य दारारतत्वाधवधत्वतो मां प्रभो ।
श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४५ ॥
शक्तो न शक्तिं तव स्तोतुमाध्यातुमीदृक्वहं करोमीश किं भो ।
श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४६ ॥
षड्वैरिवर्गं ममारान्निरकुर्वमंदोऽरीरांघिरागोऽस्तुभो ।
श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४७ ॥
सन्मार्गसंस्थास्र सत्संग सद्भक्ति सुज्ञान संपत्ति मादेहि भो ।
श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४८ ॥
हास्यास्पदोऽहं समानेष्टकीर्त्या तंवांघिं प्रपन्नोऽस्मि संरक्ष भो ।
श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ ४९ ॥
वक्ष्मी विहीनत्व हेतोः स्वकीयैः सुदूरीकृतोऽस्यध वाय्योऽस्मि भो ।
श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ ५० ॥
क्षेमंकरस्त्वं भवांभोधि मञ्जुञ्जनानामिति त्वां प्रपन्नोऽस्मि भो ।
श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ ५१ ॥
कृष्णावधूतेन गीतेन मात्रक्षराधेन गाथास्तवेनेद्व्य भो ।
श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य श्रीराघवेन्द्रार्य पाहि प्रभो ॥ ५२ ॥